रसेल का तार्किक अणुवाद दर्शन

(Philosophy of Logical Atomism)

भूमिका

वैसे तो रसेल के चिन्तन का क्षेत्र बड़ा ही विस्तृत रहा है, किन्तु 'दर्शन' शब्द के अर्थ में उनके दार्शनिक चिन्तन की पराकाष्ठा उनके तार्किक अणुवाद(LogicalA के दर्शन में है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके विचार की तार्किक सूक्ष्मताएँ तथा उनकी मान्यताएँ परिपक्व रूप में इस तार्किक अणुवाद के दर्शन में उजागर होती हैं। में उन्होंने अन्य कुछ लेख भी लिखे है, किन्तु उनका यह दर्शन उनके आठ भाषणों में संकलित है, जिन भाषणों को उन्होंने स्वयं **'तार्किक अणुवाद दर्शन'** का नाम इन भाषणों के अनुसार उनके विचारों को प्रस्तुत करना तो अधिक उपयुक्त इस पुस्तक में इस विचार को इतना लम्बा स्थान देना संभव नहीं है। अतः यहाँ के निचोड़ को अपने ढंग से व्यवस्थित कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। कहना इसी स्थान पर उपयुक्त होगा कि इस दर्शन का **एकतात्त्विक पक्ष** है (Metaphy Side) तथा एक **तार्किक पक्ष** (Logical Side) है। किन्तु, दोनों एक दूसरे के साथ जुटे है कि एक के विवरण में दूसरे का उल्लेख होना अनिवार्य हो जाता है। अतः व्यवस्था में किसी-किसी स्थल पर कुछ विचारों का उल्लेख दुहराया जा सकता है।

रसेल अपने तार्किक अणुवाद दर्शन पर कैसे पहुँचते हैं?

प्रारम्भ से ही इस प्रश्न की विवेचना वांछनीय है क्योंकि इससे भी तार्किक अणु को समझने में सहायता मिलती है। रसेल को व्हाइटहैट के साथ लिखी गयी अपनी पुस्तक **'प्रिंसिपिआ मैथेमेटिका'** की अपार सफलता पर बड़ा संतोष हुआ। उस पुस्तक का प्रयास यह दिखाना था कि गणित का वास्तविक आधार तर्कशास्त्र है। उदाहरणतः संख्या (Numbers) संबंधी उक्तियों का उन्होंने रूपान्तर इस प्रकार किया कि **'संख्या'** के प्रयोग की आवश्यकता ही न रहे, तथा पूरी उक्ति तार्किक भावों में जैसे 'तथा', 'नहीं', 'कुछ ऐसा है' आदि में पूर्णतया रुपान्तरित हो जाय। जैसे 'मेरे पास एक गाड़ी है'—इस वाक्य को इस प्रकार रूपान्तरित किया जा सकता है कि संख्या 'एक' की आवश्यकता ही न रहे, और वाक्य का अर्थ पूर्णतया निश्चित रूप में स्पष्ट हो जाय। रसेल ने इसे इस रूप में रूपान्तरित किया 'कुछ ऐसा है जो मेरी गाड़ी है, वह भी इस तरह कि यदि कोई ऐसी चीज है जिसे मेरी गाड़ी कहा जा सके तो वह उसके साथ एकरूप है। यहाँ ऐसे उदाहरणों को बढ़ाने की आवश्यकता नहीं, एक ही उदाहरण से रसेल के प्रयत्न का 'अंदाज' लग जाता है।

प्रश्न यह उठता है कि सामान्य साधारण वाक्य को ऐसे जटिल वाक्य में रूपान्तरित करने की क्या आवश्ययकता है। गणित को तर्कशास्त्र में पूर्णतया रूपान्तरित करने की योजना का प्रयोजन क्या है? रसेल को इसमें कई लाभ दिखाई दिये। (1) प्रथमतः तो **लाघवन्यय** (Ocham razor) की दृष्टि से यह योजना उपयुक्त दिखाई देती है। गणित